❍ 24 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *सर्व खजानों को कार्य में लगा उन्हें बढाया ?*

➢➢ *हर कदम श्रीमत के इशारे पर चला ?*

➢➢ *तन मन धन - सब एक बाप के आगे समर्पित किया ?*

➢➢ *ब्राह्मण परिवार के विश्वास पात्र बनकर रहे ?*

────────────────────────

✧°˚••☆••✧˚°••☆••✧˚°••☆••✧˚°

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧°˚••☆••✧˚°••☆••✧˚°••☆••✧˚°

〰✧ जैसे आजकल साइन्स के साधनों द्वारा रफ माल को भी बहुत सुन्दर रूप में बदल देते हैं। तो *आपकी श्रेष्ठ वृत्ति निगेटिव अथवा व्यर्थ को पॉजिटिव में बदल दे। आपका मन और बुद्धि ऐसा बन जाये जो निगेटिव टच नहीं करे, सेकण्ड में परिवर्तन हो जाये।*

✧°˚••☆••✧˚°••☆••✧˚°••☆••✧˚°

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

✺ *"मैं खुशनसीब आत्मा हूँ"*

~✧ सभी अपने को खुशनसीब आत्मायें अनुभव करते हो? *जो खुशनसीब आत्मायें हैं उनके मन में सदा खुशी के गीत बजते हैं। 'वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य!'- यह गीत बजता है ना। यह खुशी का गीत गाना तो सभी को आता है ना।* चाहे बूढ़ा हो, चाहे बच्चा हो, चाहे जवान हो-सभी गाते हैं।

~✧ और मन में है ही क्या जो चले। यही खुशी के गीत बजेंगे ना। और सब बातें खत्म हो गई। *बस, बाप और मैं, तीसरा न कोई। जब ऐसी स्थिति बन जाती है तब खुशी के गीत बजते हैं-'वाह बाबा वाह, वाह मेरा भाग्य वाह!' वैसे भी गाया हुआ है-'खुशी' सबसे बड़ी खुराक है, खुशी जैसी और कोई खुराक नहीं। जो खुशी की खुराक खाने वाले हैं वो सदा तन्दरुस्त रहेंगे, हेल्दी रहेंगे, कभी कमजोर नहीं होंगे।*

~✧ *जो अच्छी खुराक खाते हैं वो शरीर से कमजोर नहीं होते हैं। खुशी है मन की खुराक। मन कभी कमजोर नहीं होगा, सदा शक्तिशाली। मन और बुद्धि सदा शक्तिशाली हैं तो स्थिति शक्तिशाली होगी। ऐसी शक्तिशाली स्थिति वाले सदा ही अचल-अडोल रहेंगे।* तो खुशी की खुराक खाते हो? या कभी खाते हो, कभी भूल जाते हो? ऐसे होता है ना। शरीर के लिए भी ताकत की चीजें देते हैं तो कभी खाते हैं, कभी भूल जाते हैं। यह खुराक किस समय खाते हो? कभी खाओ, कभी न खाओ-ऐसे तो नहीं है।

⁺˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⁺˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

———————————————

⁺˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⁺˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

〰✧ आवाज में आने के लिए वा आवाज को सुनने के लिए कितने साधन अपनाते हो? बापदादा को भी आवाज में आने के लिए शरीर के साधन को अपनाना पडता है। लेकिन *आवाज से परे जाने के लिए इस साधनों की दुनिया से पार जाना पडे।*

〰✧ साधन इस साकार दुनिया में है। बापदादा के सूक्ष्म वतन वा मूल वतन में कोई साधनों की आवश्यकता नहीं है। सेवा के अर्थ आवाज में आने के लिए कितने साधन अपनाते हो? लेकिन *आवाज से परे स्थिति में स्थित होने के अभ्यासी सेकण्ड में इन सब से पार हो जाते है। ऐसे अभ्यासी बने हो?*

〰✧ *अभी-अभी आवाज में आये, अभी-अभी आवाज से परे।* ऐसी कन्ट्रोलिंग पॉवर, रूलिंग पॉवर अपने में अनुभव करते हो? संकल्प शक्ति को भी, *जब चाहे तब संकल्प में आओ, विस्तार में आओ, जब चाहो तब विस्तार को फुल स्टॉप में समा दो।* स्टार्ट करने की और स्टॉप करने की - दोनों ही शक्तियाँ समान रूप में हैं?

⁺˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

────────────────────────

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

〰✧ ऐसे फ़रिश्ते - जिसका देह और देह की दुनिया के साथ कोई रिश्ता नहीं। *शरीर में रहते ही हैं सेवा के अर्थ, न कि रिश्ते के आधार पर।* देह के रिश्ते के आधार पर नहीं रहते, सेवा के सम्बन्ध के हिसाब से रहते हो। *सम्बन्ध समझकर प्रवृत्ति में नहीं रहना है, सेवा समझकर रहना है।*

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

────────────────────────

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- हर कर्म में आनेस्टी का प्रयोग करना"*

➽➝ _ ➽➝ मैं अल्लाह के बगीचे की रूहानी गुलाब रूहानी बागबान संग गुलाब के बगीचे में, बाबा का हाथ पकड सैर कर रही हूँ... बाबा संग झूले में बैठ झूला झूल रही हूँ... फूल बरसाकर प्यारे बाबा के साथ खेल रही हूँ... प्यारे बाबा के क़दमों में कदम रख चल रही हूँ... मीठे बाबा अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख वरदानों की बरसात करते हैं... सारे खजानों को मुझ पर लुटाते हुए श्रेष्ठ मत देते हैं... *मैं आत्मा सर्व वरदानों से अपनी झोली भरते हुए प्यारे बाबा की श्रीमत पर चलते हुए पद्मों की कमाई करने की प्रतिज्ञा करती हूँ...*

❉ *प्यारे बाबा मेरा श्रेष्ठ भाग्य बनाने श्रेष्ठ और ऊँची मत देते हुए कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... श्रीमत के हाथो में ही देवताई जादू को पा सकते हो... *गर जीवन को खुबसूरत बनाना है और सुखो का अधिकारी बन मुस्कराना है तो श्रीमत पर हर कदम को उठाओ...* श्रीमत से ही जीवन दिव्यता से सजकर अथाह सुख दिलाएगा..."

➽➝ _ ➽➝ *मैं आत्मा पंछी खुला आसमान पाकर इठलाती हुई खुशियों में लहराते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा ईश्वर पिता को शिक्षक रूप में पाकर श्रीमत के जादू से स्वयं को देवताई स्वरूप में निखार रही हूँ... *श्रीमत ही मेरे जीवन की साँस है, मीठे बाबा आपका साथ ही मुझ आत्मा के प्राण है... ऐसा सच्चा साथ मुझे देवताओ सा सजा रहा है..."*

❉ *मीठा बाबा मीठी मुरली से मेरे सांसों का श्रृंगार करते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे.... इंसानी मतो पर चलकर जीवन को दुःख भरे दलदल में समा दिया है... अब श्रीमत की ऊँगली पकड़कर इस दलदल से बाहर निकल सुन्दरतम स्वरूप में मुस्कराओ... *श्रीमत ही सच्चे सुखो के फूलो की बहार जीवन में खिलाएंगी... श्रीमत पर ही जीवन को हरपल चलाना है..."*

➽➝ _ ➽➝ *इस जीवन में सबसे बड़ा उपहार प्यारे बाबा की श्रीमत को पाकर मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा आपके मीठे साये में फूल

समान खिलती जा रही हूँ... मेरा जीवन गुणो की खुशबु से भर गया है... *मै आत्मा श्रीमत को अपनाकर कितना मीठा प्यारा जीवन जीती जा रही हूँ... और श्रेष्ठता की ओर बढ़ती चली जा रही हूँ..."*

❊ *मेरे बाबा दिव्य ज्ञान देकर हाथ पकड़कर श्रीमत पर चलना सिखाते हुए कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... *श्रीमत ही सुनहरे सुखो का सच्चा सच्चा आधार है इसलिए श्रीमत को हर पल हर संकल्प हर साँस में भर लो...* और खुबसूरत देवताई श्रंगार से सज जाओ... ईश्वरीय मत जीवन को श्रेष्ठ बनाकर अथाह सुख सम्पदा को दामन में भर देगी..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा प्यारे बाबा के स्नेह भरे पलकों में बैठ बाबा की दुआओं को लेते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा ईश्वरीय मत पर चलकर सदा की सुखी हो गई हूँ... *मुझ आत्मा का जीवन सच्चे प्रेम, सच्चे ज्ञान, सच्चे सुखो का पर्याय हो गया है...* मीठे बाबा... आपकी राहो का पथिक बनकर मै आत्मा खुशियो के बगीचे में पहुंच गयी हूँ..."

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सर्व खजानो को कार्य में लगा उन्हें बढाना*"

➳ _ ➳ भक्ति में भगवान को पाने के लिए भक्तों ने क्या - क्या नही किया यही चिंतन करते - करते आँखों के सामने एक दृश्य उभर आता है, जिसका उल्लेख बाबा मुरली के माध्यम से अपने मधुर महावाक्यों में अनेक बार करते हैं। *इस दृश्य में मैं देख रही हूँ काशी कलवट खाने वाले भक्तों को जो अपना सिर काट कर शिव के ऊपर बलि चढ़ा रहें हैं*। यह दृश्य देख मैं मन ही मन विचार करती हँ कि बेचारे ये भक्त इस बात से कितने अनजान है कि

भगवान ऐसी बलि कभी स्वीकार नही करते।

➾ _ ➾ भगवान के ऊपर बलि चढ़ना माना बुद्धि से भगवान के ऊपर सम्पूर्ण समर्पित हो जाना। *इसलिए जो तन - मन - धन सब कुछ बाप को अर्पण कर, कदम - कदम उनकी श्रीमत पर चलते हैं वही वास्तव में भगवान पर पूरा बलि चढ़ते हैं और भगवान के दिल में अपनी जगह बना लेते हैं*। और अब जबकि भगवान सम्मुख आये हुए हैं तो इस समय जो भगवान को पहचान कर, देह सहित उन पर पूरा बलि चढ़ेगा वो कल्प - कल्प के लिए अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य का निर्माण कर लेगा।

➾ _ ➾ कल्प - कल्प के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ भाग्य बनाने के लिए मैं स्वयं से प्रतिज्ञा करती हूँ कि *अपने इस अंतिम जन्म में अब मैं देह सहित बाप पर पूरा बलि चढ़, फ्लेन्थ्रोफिस्ट बन, सर्व आत्माओं का कल्याण अवश्य करूँगी ताकि भगवान के दिल तख्त की अधिकारी आत्मा बन, भविष्य विश्व राज्य की अधिकारी बन सकूँ*। महादानी बन सर्व आत्माओं का कल्याण करने का लक्ष्य लेकर, अब मैं स्वयं को भरपूर करने के लिए अपने अनादि स्वरूप में स्थित होकर, सर्वगुणों और सर्व शक्तियों के सागर अपने शिव पिता परमात्मा के पास उनके धाम की ओर चल पड़ती हूँ।

➾ _ ➾ मन बुद्धि की एक अति सुंदर, मन को आनन्दित करने वाली आंतरिक यात्रा पर चलते हुए, इस टॉकी और मूवी वर्ल्ड से परे उस साइलेन्स वर्ल्ड में मैं आत्मा पहुँचती हूँ जहाँ ना कोई आवाज है और ना कोई संकल्प है। *केवल शान्ति ही शान्ति है। इस शान्ति धाम में गहन शान्ति का अनुभव करके, तृप्त हो कर अब मैं शांति के सागर अपने शिव पिता के समीप जा कर बैठ जाती हूँ। बाबा आ रही सर्वशक्तियों और सर्वगुणों की अनन्त किरणे मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं और मुझे शक्तिशाली बना रही हैं*। अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते हुए प्रेम के सागर अपने प्यारे बाबा के प्यार की गहराई में मैं समाती जा रही हूँ

➳ _ ➳ बाबा के प्यार में समा कर, स्वयं को पूरी तरह तृप्त और शक्तियों से भरपूर करके अब मैं आत्मा सूक्ष्म वतन में आ जाती हूँ और अपने फरिश्ता स्वरूप को धारण कर बापदादा के सम्मुख पहुँच जाती हूँ। *अपनी शक्तिशाली दृष्टि से मुझे निहारते हुए बाबा अपनी असीम ऊर्जा मेरे अंदर भर रहें हैं। अपने हाथों का हल्का - हल्का स्पर्श मेरे सिर पर करते हुए बाबा परमात्म शक्तियों से मुझे भरपूर कर रहें है*। मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर अपने सभी अविनाशी खजाने, गुण और शक्तियां मुझे विल कर रहें हैं। अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख कर बाबा मुझे " महादानी भव " का वरदान दे रहें हैं।

➳ _ ➳ *परमात्म गुणों, शक्तियों और ख़ज़ानों से भरपूर होकर बाबा से मिले वरदान को फलीभूत करने के लिए मैं फ़रिश्ता अब सूक्ष्म वतन से नीचे आता हूँ और महादानी बन विश्व ग्लोब पर आ कर बैठ जाता हूँ*। बाबा के साथ कम्बाइंड होकर, सर्वगुणों और सर्वशक्तियों की किरणे अब मैं सारे विश्व मे फैला रहा हूँ। ज्ञान वर्षा कर, सबको परमात्म अवतरण का संदेश देता हुआ अब मैं फ़रिश्ता नीचे साकार लोक में आ जाता हूँ ।

➳ _ ➳ *अपने सूक्ष्म आकारी शरीर के साथ अपने साकार शरीर मे मैं प्रवेश कर जाता हूँ और अपने ब्राह्मण स्वरुप में स्थित होकर, महादानी बन अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली सभी आत्माओं को परमात्म ज्ञान देने और परमात्म पालना का अनुभव करवाने की ईश्वरीय सेवा मे लग जाता हूँ*

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं मेरे मेरे को समाप्त कर पुरानी दुनिया से मरने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं निर्भय आत्मा हूँ।*
✺ *मैं ट्रस्टी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा स्वप्न में भी बेहद के संस्कार इमर्ज कर लेती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा अपनी दिल को ऐसा विशाल बना लेती हूँ ।*
✺ *मैं बेहद सेवाधारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ अच्छा - बाकी एक बारी मिलने का रहा हुआ है। वैसे तो साकार द्वारा मिलन मेले का, इस रूपरेखा से मिलने का आज अन्तिम समय है। प्रोग्राम प्रमाण तो आज साकार मेले का समाप्ति समारोह है फिर तो आगे की बात आगे देखेंगे। एकस्ट्रा एक बाप का चुगा भी मिल जायेगा। लेकिन इस सारे मिलन मेले का स्व प्रति सार क्या लिया? सिर्फ सुना वा समाकर स्वरूप में लाया? इस मिलन मेले की सीजन विशेष किस सीजन को लायेगी? इस सीजन का फल क्या निकलेगा? *सीजन के फल का महत्व होता है ना! तो इस सीजन का फल क्या निकला! बापदादा मिला यह तो हुआ लेकिन मिलना अर्थात् समान बनना।* तो सदा बाप समान बनने के दृढ संकल्प का फल बापदादा को

दिखायेंगे ना! ऐसा फल तैयार किया है? अपने को तैयार किया है? वा अभी सिर्फ सुना है, बाकी तैयार होना है? सिर्फ मिलन मनाना है वा बनना है?

➳ _ ➳ जैसे मिलन मनाने के लिए बहुत उमंग-उत्साह से भाग-भाग कर पहुँचते हो वैसे बनने के लिए भी उड़ान उड़ रहे हो? आने जाने के साधनों में तकलीफ भी लेते हो। लेकिन उड़ती कला में जाने के लिए कोई मेहनत नहीं है। *जो हद की डालियाँ बनाकर डालियों को पकड़ बैठ गये हो, अभी हे उड़ते पंछी, डालियों को छोड़ो। सोने की डाली को भी छोड़ो। सीता को सोने के हिरण ने शोक वाटिका में भेजा। यह मेरा मेरा है, मेरा नाम, मेरा मान, मेरा शान, मेरा सेन्टर यह सब - सोने की डालियाँ हैं।* बेहद का अधिकार छोड़, हद के अधिकार लेने में आ जाते हो। मेरा अधिकार यह है, यह मेरा काम है - इस सबसे उड़ते पंछी बनो। इन हद के आधारों को छोड़ो। तोते तो नहीं हो ना जो चिल्लाते रहो कि छुड़ाओ। छोड़ते खुद नहीं और चिल्लाते हैं कि छुड़ाओ। तो ऐसे तोते नहीं बनना। छोड़ो और उड़ो। छोड़ेंगे तो छूटेगें ना! बापदादा ने पंख दे दिये हैं - पंखो का काम है उड़ना वा बैठना? तो उड़ते पंछी बनो अर्थात् उड़ती कला में सदा उड़ते रहो। समझा - इसको कहा जाता है सीजन का फल देना।

✺ *"ड्रिल :- सोने की डालियों को छोड़ उड़ता पंछी स्थिति का अनुभव करना।*

➳ _ ➳ सफेद चमकीली ड्रेस पहने हुए मैं आत्मा अपने आप को देख रही हूं... और *बाबा से पवित्रता की किरणें लेकर अपनी ड्रेस को और भी चमकीली अनुभव कर रही हूं... जैसे जैसे मैं अपनी सफेद चमकीली पोशाक को और भी चमकीला अनुभव करती हूं... वैसे वैसे मैं देखती हूं कि बाबा ने मुझे तो उड़ने के लिए पंख भी लगा दिए हैं... जो मुझे इस दुनिया से ऊपर की ओर उड़ा कर ले जाएंगे... और मैं अपने आपको इस हलचल भरी संकल्पों की इस दुनिया से दूर परमधाम में अनुभव करती हूँ...* जैसे ही मैं वह पंख धारण करती हूं... मैं आकाश में उड़ने लगती हूं... और उड़ते-उड़ते अपने आपको बहुत ही हल्के पक्षी के पंख के रूप में अनुभव करती हूं...

➳ _ ➳ और इस हल्केपन की स्थिति को फील करते हुए... मैं अपने आप

को एक मायावी पेड़ की शाखा पर अनुभव करती हूँ... तभी मैं सोचती हूं कि यह मायावी पेड़ जो मुझे आकर्षित कर रहा है... यह मुझे उड़ने से रोक रहा है... परंतु मैं इस पेड़ की शाखा में अपने आप को नहीं फंसने दूंगी... और अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए उड़ने का प्रयास करुंगी... इतना संकल्प कर मैं फरिश्ते समान चमकीली ड्रेस पहनकर फिर से खुले वातावरण में और खुले आसमान में उड़ने लगती हूं... और *उड़ते-उड़ते सफेद पोशाक में मैं मधुबन बाबा मिलन में आकर बैठ जाती हूं... और अपने आप को बापदादा के सामने अनुभव करती हूँ... बापदादा मुझे अपनी दृष्टि से निहाल कर रहे हैं... और मैं बापदादा द्वारा दी हुई दृष्टि को अपने अंदर समाती जा रही हूं...*

➽ _ ➽ और उस दौरान मुझे यह आभास होता है कि... मानो बाबा मुझे कह रहे हो कि... आज तुम यहां से अपने आप को पके हुए फल की भांति समझकर जाओ... क्योंकि सभी पके हुए फल ही पसंद करते हैं... अर्थात यहां से सभी शक्तियों से परिपूर्ण होकर जाओ... ताकि तुम अपनी शक्तियों से सभी आत्माओं को तृप्त कर सको... और इस रूहानी मिलन का असल फल प्राप्त कर सको... मेरे मन में जैसे ही यह संकल्प उत्पन्न होता है... मेरा मन अपने आपको बहुत ही सौभाग्यशाली समझता है... और *मैं अपने आपको शक्तियों से भरे हुए फल के समान अनुभव करती हूं... जो सभी शक्तियों रुपी मिठास प्राप्त किए हुए हैं... और अपने मन में यह भाव लेकर अपने अगले संकल्प की ओर प्रस्थान करती हूं... और अगला भाव जो मेरी मन बुद्धि में आता है... कि मेरेपन की भावना को समाप्त करते हुए मुझे निमित्त भाव से हर कर्म करना है...*

➽ _ ➽ अब मैं अपने आपको इन रुहानी संकल्पों से परिपूर्ण करके फिर से उड़ जाती हूं... नीले आसमान में... और स्वतंत्र अवस्था में मैं अपने इन शुद्ध संकल्पों का इस सृष्टि पर रहने वाली आत्माओं पर उपयोग कर रही हूं... मैं उन्हें इन पवित्र संकल्पों के द्वारा उनके पुराने आसुरी संस्कारों को समाप्त करने का प्रयास कर रही हूं... और उन सभी आत्माओं को हंसते खिलखिलाते हुए देख रही हूं... जो पहले मेरेपन की बीमारी से पीड़ित थे... वह अब निमित्त भाव में रहकर खुशनुमा जीवन जी रहे हैं... अब मैं एक सफेद रंग की इस ड्रेस को गहराई से फील करते हुए... और इस हल्केपन की स्थिति को अनुभव करते

हुए... धीरे-धीरे इस धरा पर आने का प्रयत्न करती हूं... और *मेरे रास्ते में आती हुई हर छोटी बड़ी चीज को शांति की वाइब्रेशन देती जा रही हूं... हर चीज पवित्र होती जा रही है... और मेरी मन बुद्धि भी एकदम शांत अवस्था में इस भाव को अनुभव कर रहे हैं...*

➢➢ _ ➢➢ और अब मैं जैसे-जैसे नीचे आती हूं... मुझे वह सभी पेड़ पौधे और शाखाएं दिखाई देती है... परंतु अब वह मुझे सोने के पिंजरे रूपी बेड़ियां दिखाई देती है... मैं उनकी सुंदरता को बस दूर से निहार कर आगे बढ़ जाती हूं... और प्रकृति को पवित्र वाइब्रेशन देती हुई नीचे की तरफ आती जा रही हूं... अपने आप को इस अवस्था में पाकर, मैं आत्मिक स्थिति से अपने आप को बहुत ही गहराई से अनुभव करती हूँ... इस स्थिति को पूर्ण रूप से समझ कर अब *जब भी आसमान में उड़ता परिंदा देखती हूं... तो अपने आप को इसी अवस्था में फील करती हूं... और परमात्मा का बार-बार इस स्थिति के लिए धन्यवाद करती हूं... और फिर से अपने आपको स्वतन्त्र परिंदे रूपी फरिश्ते समान स्थिति में अनुभव करती हूं... और उड़ जाती हूँ प्रभु मिलन की चाह में...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔